परिशिष्ट

मुहावरे

* मुहावरा वह वाक्यांश जो सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ में प्रयुक्त होता है; मुहावरे में उसके लाक्षणिक और व्यंजनात्मक अर्थ को ही स्वीकार किया जाता है। वाक्य में प्रयुक्त किए जाने पर ही मुहावरा सार्थक प्रतीत होता है।

* अपना उल्लू सीधा करना – अपना स्वार्थ सिद्ध करना।
* दिन दूना रात चौगुना बढ़ना – दिन-प्रतिदिन अधिक उन्नति करना।
* अक्ल पर पत्थर पड़ना – बुद्धि काम न करना।
* आँखों में धूल झोंकना – धोखा देना।
* आँखें बिछाना – अति उत्साह से स्वागत करना।
* कान में कौड़ी डालना – गुलाम बनाना।
* कंगाली में आटा गीला होना – विपत्ति में और अधिक विपत्ति आना।
* कुएँ में बाँस डालना – जगह-जगह खोज करना।
* गुड़ गोबर करना – बने काम को बिगाड़ देना।
* गड़े मुर्दे उखाड़ना – पुरानी कटु बातों को याद करना।
* कटे पर नमक छिड़कना – दुखी को और दुखी बनाना।
* एक और एक ग्यारह – एकता में शक्ति होना
* घर फूँक तमाशा देखना – अपनी ही हानि करके प्रसन्न होना।
* घाट-घाट का पानी पिया होना – हर प्रकार के अनुभव से परिपूर्ण होना।
* चाँदी काटना – बहुत लाभ कमाना।
* जहर का घूँट पीना – अपमान को चुपचाप सह लेना।
* जी-जान से काम करना – पूरी क्षमता के साथ काम करना।
* तिल का ताड़ बनाना – छोटी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना।
* पत्थर की लकीर होना – पक्की बात।
* पेट में दाढ़ी होना – छोटी आयु में बुद्धिमान होना।
* फूँक-फूँककर पाँव रखना – अति सावधानी बरतना।
* मुट्ठी गर्म करना – रिश्वत देना।
* रंग में भंग होना – प्रसन्नता के वातावरण में विघ्न पड़ना।
* शक्ल पर बारह बजना – बड़ा उदास रहना।
* सितारा चमकना – भाग्योदय होना
* आठ-आठ आँसू रोना – बहुत अधिक रोना।
* आँखें चार होना – प्रेम होना।
* अगर-मगर करना – टाल-मटोल करना।
* अपना ही राग अलापना – अपनी ही बातें करते रहना।
* आसमान पर थूकना – अशोभनीय कार्य करना।
* उल्टी गंगा बहाना – उल्टा काम करना।

- उगल देना – भेद बता देना ।
- ओखली में सिर देना – जान-बूझकर जोखिम उठाना ।
- एक लाठी से हाँकना – सबके साथ समान व्यवहार करना ।
- चार चाँद लगाना – शोभा बढ़ाना ।
- पापड़ बेलना – कड़ी मेहनत करना ।
- कान भरना – चुगली करना ।
- कोल्हू का बैल – लगातार काम में लगे रहने वाला । बहुत परिश्रम करने वाला ।
- कब्र में पैर लटकना – मरने के समीप होना ।
- कागजी घोड़े दौड़ाना – लिखा-पढ़ी करना ।
- कौड़ी-कौड़ी का मोहताज – अत्यंत निर्धन होना ।
- खाला का घर – आसान काम ।
- खाल मोटी होना – बेशर्म होना ।
- गिरगिट की तरह रंग बदलना – अवसरवादी होना ।
- घोड़े बेचकर सोना – गहरी नींद सोना । निश्चिंत होकर सोना ।
- हाथ खींचना – साथ न देना ।
- चोली-दामन का साथ होना – घनिष्ठ संबंध होना ।
- चोर की दाढ़ी में तिनका – अपराधी का भयभीत और सशंकित रहना ।
- जली-कटी सुनाना – कटु-चुभती बातें करना ।
- डकार तक न लेना – सब कुछ हजम कर लेना ।
- डूबती नाव पार लगाना – कष्टों से छुटकारा देना ।
- तलवे चाटना – खुशामद करना ।
- दाल न गलना – काम न बनना । चतुराई काम न आना ।
- पेट काटना – भूखा रहना ।
- पाँचों उँगलियाँ घी में होना – चहुँ तरफ लाभ होना ।
- पोंगा होना – नासमझ होना ।
- बात का धनी – वचन का पक्का
- मरने की फुरसत न होना – कामों में बहुत व्यस्त होना ।
- मूँछ उखाड़ना – घमंड चूर-चूर कर देना ।
- रोटियाँ तोड़ना – मुफ्त में खाना ।
- वीरगति को प्राप्त होना – युद्ध में वीरतापूर्वक मृत्यु पाना ।
- स्वांग भरना – विचित्र वेश बनाना, किसी की नकल उतारना ।
- हवा लगना – असर पड़ना/होना ।
- हवाई किले बनाना – बहुत अधिक कल्पना करना ।
- दाई से पेट छिपाना – भेद जानने वाले से सच्ची बात छिपाना ।
- सिर खपाना – कठोर परिश्रम करना ।
- खबर गरम होना – चर्चा-ही-चर्चा होना ।
- चिराग तले अँधेरा – गुणवान व्यक्ति में भी दोष होना ।

भावार्थ : पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक २३, २४ : कविता – गुरुबानी – गुरु नानक

* जो लोग गुरु से लापरवाही बरतते हैं और अपने-आपको ही ज्ञानी समझते हैं; वे व्यर्थ ही उगने वाले तिल की झाड़ियों के समान हैं । दुनिया के लोग उनसे किनारा कर लेते हैं । इधर से वे फलते-फूलते दिखाई देते हैं पर उनके भीतर झाँककर देखो तो गंदगी और मैल के सिवा कुछ दिखाई नहीं देगा ।। १ ।।
* मोह को जलाकर उसे घिसकर स्याही बनाओ । बुद्धि को श्रेष्ठ कागज समझो ! प्रेमभाव की कलम बनाओ । चित्त को लेखक और गुरु से पूछकर लिखो- नाम की स्तुति । और यह भी लिखो कि उस प्रभु का न कोई अंत है और न कोई सीमा ।। २ ।।
* हे मन ! तू दिन-रात भगवान के गुणों का स्मरण कर जिन्हें एक क्षण के लिए भी नहीं भूलता । संसार में ऐसे लोग विरले ही होते हैं । अपना ध्यान उसी में लगाओ और उसकी ज्योति से तुम भी प्रकाशित हो जाओ । जब तक तुझमें अहंभाव या 'मैं, मेरा, मेरी' की भावना रहेगी तब तक तुझे प्रभु के दर्शन नहीं हो सकते । जिसने हृदय से भगवान के नाम की माला पहन ली है; उसे ही प्रभु के दर्शन होते हैं ।। ३ ।।
* हे प्रभो ! अपनी शक्ति के सब रहस्यों को केवल तुम्हीं जानते हो । उनकी व्याख्या कोई दूसरा कैसे कर सकता है? तुम प्रकट रूप भी हो, अप्रकट रूप भी हो । तुम्हारे अनेक रंग हैं । अनगिनत भक्त, सिद्ध, गुरु और शिष्य तुम्हें ढूँढ़ते-फिरते हैं । हे प्रभु ! जिन्होंने तेरा नामस्मरण किया, उनको प्रसाद में (भिक्षा में) तुम्हारे दर्शन की प्राप्ति हुई है । तुम्हारे इस संसार के खेल को केवल कोई गुरुमुख ही समझ सकता है । तुम्हारे इस संसार में तुम्हीं युग-युग में विद्यमान रहते हो ।। ४ ।।
* हे पंडित ! संसार में दिन-रात महान आरती हो रही है । आकाश रूपी थाल में सूर्य और चाँद दीपक और हजारों तारे-सितारे मोती बनकर जगमगा रहे हैं । मलय की खुशबूदार हवा का धूप महक रहा है । वायु चँवर से हवा कर रही है । जंगल के सभी वृक्ष फूल चढ़ा रहे हैं । हृदय में अनहद नाद का ढोल बज रहा है । हे मनुष्य ! इस महान आरती के होते हुए तेरी आरती की क्या आवश्यकता है, क्या महत्त्व है? अर्थात भगवान की असली आरती तो मन से उतारी जाती है और श्रद्धा ही भक्त की सबसे बड़ी भेंट है । फिर आप लोग थालियों में ये थोड़े-थोड़े फल-फूल लेकर मूर्ति पर क्यों चढ़ाते हो? क्या उसके पास थालियों की कमी है? अरे ! आकाश ही उसका नीलम थाल है ! सूर्य और चंद्रमा की ओर देखो । वे भगवान की आरती में रखे हुए दीपक हैं । ये तारे ही उसके मोती हैं और हवा उसे दिन-रात चँवर झुला रही है ।। ५ ।।

भावार्थ : पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक २७, २८ : कविता – वृंद के दोहे

* माँ सरस्वती के ज्ञान भंडार की बात बड़ी ही अनूठी और अपूर्व है । यह ज्ञान भंडार जितना खर्च किया जाए, उतना बढ़ता जाता है और खर्च न करने पर वह घटता जाता है अर्थात ज्ञान देने से बढ़ता है और अपने पास रखने पर नष्ट हो जाता है ।। १ ।।
* आँखें ही मन की सारी अच्छी-बुरी बातों को व्यक्त कर देती हैं... जैसे स्वच्छ आईना अच्छे-बुरे को बता देता है ।। २ ।।
* अपनी पहुँच, क्षमता को पहचानकर ही कोई भी कार्य कीजिए । जैसे- हमें उतने ही पाँव फैलाने चाहिए जितनी हमारी चादर हो ।। ३ ।।
* यदि आप व्यापार करते हैं तो व्यापार में छल-कपट का सहारा न लें । छल-कपट से किया गया व्यवहार ग्राहक को आपसे दूर ले जाता है । जैसे- लकड़ी (काठ) की हाँडी आग पर एक ही बार चढ़ती है, बार-बार नहीं क्योंकि लकड़ी पहली बार में ही जल जाती है ।। ४ ।।
* ऊँचे स्थान पर बैठने से बिना गुणोंवाला कोई भी व्यक्ति बड़ा नहीं बन जाता । ठीक वैसे ही जैसे मंदिर के शिखर पर बैठने से कौआ गरूड़ नहीं बन जाता ।। ५ ।।

* दूसरे के भरोसे अपना कार्य अथवा व्यवसाय छोड़ देना उचित नहीं है । जैसे- पानी से भरे बादलों को देखकर पानी से भरा अपना घड़ा फोड़ देना बुद्धिमानी नहीं है ।। ६ ।।
* दुष्ट अथवा छोटे व्यक्ति की संगति में रहना अथवा कुछ कहकर उसे छेड़ना श्रेयस्कर नहीं है । जैसे- कीचड़ में पत्थर फेंकने से वह कीचड़ हमपर ही उछलकर हमें गंदा कर देता है ।। ७ ।।
* जो ऊँचाई पर, उच्च पद पर पहुँचता है, उसका नीचे उतर आना भी उतना ही स्वाभाविक है । जैसे- दोपहर के समय तपा हुआ दग्ध सूर्य शाम के समय अस्त हो जाता है, डूब जाता है ।। ८ ।।
* जिसके पास गुण होते हैं, उसी के अनुसार उसे आदर प्राप्त होता है । जैसे- मधुर वाणी के कारण कोयल को आम प्राप्त होते हैं और कर्कश ध्वनि के कारण कौए को निबौरी (नीम का फल) प्राप्त होती है ।। ९ ।।
* अविवेक के साथ किया गया कार्य स्वयं के लिए हानिकर सिद्ध होता है । जैसे- कोई मूर्ख अपनी अविवेकता से कार्य कर अपने पाँव पर अपने हाथ से कुल्हाड़ी मार बैठता है ।। १० ।।
* पालने में बच्चे के लक्षण देखकर ही उसके अच्छे-बुरे होने का पता चल जाता है । जैसे- उत्तम बीज के पौधों के पत्ते चिकने अर्थात स्वस्थ पाए जाते हैं ।। ११ ।।

भावार्थ : पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक ६५-६६ : कविता - सुनु रे सखिया और कजरी

सुनु रे सखिया

* इसमें नायिका अपनी सखियों से कह रही है कि सुन सखी, बसंत ऋतु आ गई है, सब तरफ फूल महकने लगे हैं । बसंत ऋतु के आने से सरसों फूल गई है, अलसी अलसाने लगी, पूरी धरती हरियाली की चादर ओढ़ खिल उठी है । कली-कली फूल बनके मुस्कुराने लगी है । इस ऋतु के आने से खेत, जंगल सब हरे-भरे हो गए हैं, जिसकी वजह से तन-मन भी हुलसने लगे हैं । इंद्रधनुष के रंगों की तरह रंग-बिरंगे फूल खिल उठे हैं । कजरारी आँखों में सपने मुस्कुराने लगे हैं और गले से मीठे गीत फूटने लगे हैं । बगिया के साथ यौवन भी अंगड़ाइयाँ लेने लगा है । मधुर-मस्त बयार प्यार बरसाकर तार-तार रँगने लगी है । हर एक का मन गुलाब की तरह खिल रहा है । बाग-बगीचे हरे-भरे हो गए, कलियाँ खिलने लगीं, भौंरे आस-पास मँड़राने लगे । गौरैया भी माथे पर फूल सजा इतराने लगी है । किंतु हे सखी, पिया के पास न होने से ये सब बबूल के काँटों की तरह चुभ रहे हैं । आँख में काजल धुल रहा है । आँसुओं की झड़ी लगी है पर बसंत फिर भी आ गया है फूलों की महक लेकर ।

कजरी

* मनभावन सावन आ गया । बादल घिर-घिर आने लगे । बादल गरजते हैं; बिजली चमकती है और पुरवाई चल रही है । रिमझिम-रिमझिम मेघ बरसकर धरती को नहला रहे हैं । दादुर, मोर, पपीहा बोलकर मेरे हृदय को प्रफुल्लित कर रहे हैं । जगमग-जगमग जुगनू इधर-उधर डोलकर सबका मन लुभा रहे हैं । लता-बेल सब फलने-फूलने लगे हैं । डाल-डाल महक उठी है । सावन आ गया है । सभी सरोवर और सरिताएँ भरकर उमड़ पड़ी हैं । हमारा हृदय सरस गया है । लोक कवि कहता है- 'हे प्रिय ! शीघ्र चलो, श्याम की बंसी बज रही है ।'

पारिभाषिक शब्दावली

१. पदनाम, प्रशासनिक एवं कार्यालय में प्रयुक्त शब्द

(१) Ambassador = राजदूत
(२) Announcer = उद्घोषक
(३) Attesting Officer = साक्षांकित अधिकारी
(४) Census Officer = जनगणना अधिकारी
(५) Circle Inspector = अंचल निरीक्षक
(६) Custodian = अभिरक्षक
(७) Interpreter = दुभाषिया
(८) Judge = न्यायाधीश
(९) Justice = न्याय, न्यायमूर्ति
(१०) Liaison Officer = संपर्क अधिकारी
(११) Verification Officer = सत्यापन अधिकारी
(१२) Adjournment = स्थगन
(१३) Advance = अग्रिम
(१४) Commissioner = आयुक्त
(१५) Agenda = कार्यसूची
(१६) Amendment = संशोधन
(१७) Audit Objections = लेखापरीक्षा आपत्तियाँ
(१८) Authentic = अधिप्रमाणित
(१९) Autonomous = स्वायत्त
(२०) Bond = बंधपत्र
(२१) Charge Sheet = आरोपपत्र
(२२) Compensation = मुआवजा
(२३) Deduction = कटौती
(२४) Diciplinary Action = अनुशासनिक कार्रवाई
(२५) Eligibility = पात्रता
(२६) Enrolment = नामांकन
(२७) Exemption = छूट
(२८) Expert = विशेषज्ञ
(२९) Gazetted = राजपत्रित
(३०) Honororium = मानदेय
(३१) Internal = आंतरिक
(३२) Invalid = अवैध
(३३) Joining Date = कार्यग्रहण तिथि
(३४) Medical Benefit = चिकित्सा सुविधा
(३५) Registration = पंजीकरण
(३६) Suspension = निलंबन
(३७) Temporary = अस्थायी
(३८) Warning = चेतावनी
(३९) Casual Leave = आकस्मिक छुट्टी/अवकाश
(४०) Earned Leave = अर्जित छुट्टी/अवकाश
(४१) Bye-Law = उपविधि
(४२) Invoice = बीजक
(४३) Minutes = कार्यवृत्त
(४४) Ordinance = अध्यादेश
(४५) Procedure = कार्यविधि
(४६) Public Accounts Committee = लोक लेखा समिति
(४७) Admiral = नौसेनाध्यक्ष

२. बैंक एवं वाणिज्य क्षेत्र से संबंधित शब्द

(४८) Accurued Interest = उपार्जित ब्याज
(४९) Acknowledgement = पावती
(५०) Apex Bank = शिखर बैंक
(५१) Balance = शेष राशि
(५२) Bank Statement = बैंक विवरण
(५३) Commission = आढ़त
(५४) Dead Account = निष्क्रिय खाता
(५५) Fixed Deposit = सावधि जमा
(५६) Payment = भुगतान, अदायगी
(५७) Pay Order = अदायगी आदेश

(५८) Reinvestment = पुनर्निवेश

(५९) Indemnity = नामित व्यक्ति

(६०) Surrender = अभ्यर्पण

(६१) Dismiss = पदच्युत

(६२) Action = कार्यवाही

(६३) Paid Up = चुकता

(६४) Assured = बीमित

(६५) Arrears = बकाया

(६६) Balance Sheet = तुलना पत्र

(६७) Record = अभिलेख

(६८) Balance of Payment = शेष भुगतान

(६९) Demurrage = विलंब शुल्क

(७०) Transaction = लेन-देन

३. वैज्ञानिक शब्दावली

(७१) Speed = गति

(७२) Friction = घर्षण

(७३) Antibiotics = प्रतिजैविक पदार्थ

(७४) Meteorology = मौसम विज्ञान

(७५) Antiseptics = रोगानुरोधक

(७६) Optic Fibre = प्रकाशीय तंतु

४. कंप्यूटर (संगणक) विषयक

(७७) Output = निकास

(७८) Graphic Table = आरेखन तालिका

(७९) Integrated Circuit = एकीकृत परिपथ

(८०) Auxilliary Memory = सहायक स्मृति

रसास्वादन के मुद्दे

- शीर्षक
- रचनाकार
- केंद्रीय कल्पना
- रस/अलंकार
- प्रतीक विधान
- कल्पना
- पसंद की पंक्तियाँ तथा प्रभाव
- कविता पसंद आने के कारण

इसके अतिरिक्त अन्य मुद्दे भी स्वीकार्य हैं।